17-8-68 ओम् शान्ति। रात्री क्लास

मूल बात है सबको बाप की पहचान मिले तो बाप से वर्सा लेने पुरुषार्थ करें। और बाप का वर्सा मिले तो सब दुःख दूर हो जावें।(बाम्बे मे जो सेमीनार हुआ था उसमे कुमारका उषा आद ने जो भाषण किया था वो टेप क्लास मे चल रही है)उषा ने ठीक बताया है।हमको पढ़ाने वाला कौन है वो भी ठीक ही रीती बताया है फिर कुमारका का काम था इस ही पुआईन्ट पर उठाना कि हमको पढ़ाने वाला शिव बाबा है।और यह हमारी रे आः है। चित्र ल-न और शिव का वहां पर ले गये थे। तो उस पर ही समझाना चाहिये नां।यह विश्व रे शान्तिः स्थापन हो रही है। बाप कहते है काम महा शत्रु है इस पर ही जीत पहनो तो जगत जीत बनोगे। बाप की महिमा करनी चाहिये कि सब की सदगति करने वाला बाप है। हम सब पतित है।बाप कहते है कि मामेकम् याद करो तो पाप भस्म हो जावेंगे।और सुखधाम चले जाओगे।अभी है दुःखधाम। अपरमअपार दुःख है।सतयुग मे सुखधाम था।क्रिश्चयन्स भी कहते है 5000साल पहले सुखधाम था। फिर से वो स्थापन हो रहा है।उषा ने अच्छे पुआईन्ट पर लाया है। उसकी ही कुमारका उठाती थी। अच्छी रीती विस्तार से समझा चाहिये नां। उषा ने तो ईशारा ठोक ही दिया है।यह हम सबआत्माओं का बाप है।इनको याद करने से पवित्र बन जावेंगे।यह बेहद के बाप की लाटरी है।हम ब्रः कुः कुः का जोर ही सारा पवित्रता पर है। अब पवित्र दुनियां स्थापन होनी है।हमको वो ही पढ़ाते है।कोई मनुष्य नही पढ़ाते है भगवान ने ही स्वर्ग की स्थापना की है।भारत सोने की चिडियां था। कोई भी दुःख नही था। अब तो अथाह दुःख है।ऐसे-2 समझाती तो किसको भी टच हो सकता था।परन्तु ड्रामा मे ही ऐसा नही होना था। वर्णन ही इन ल-न का करना है।यही राज्य अब फिर से स्थापन हो रहा है।हमारी यह पाण्डव सेना है। हमको श्रीमत देने वाला बाप है जिससे ही हम श्रेष्ट बनते है। सर्विस का शौक होना चाहिये। परन्तु देह-अभिमानी से देही-अभिमानी ही नही बन सकते है।क्रिमनलऔय ही पागल बना देती है।ठहर ही नही सकते है।देहीअभिमानी शान्त हो जावेंगे। वो हो रे आः तो बच्चों को है। समय लगता है। रात-दिन का फर्क रहता है। फर्स्ट-सेकिण्ड थर्ड तो होते ही है नां। इस बेहद की पढ़ाई मे भी नम्बरवार है। समझाना चाहिये नां कि वो हमसे बहुत ऊंचे है। ऐसा ही हमको भी बनना है।राजयोग की तपस्या पर भी समझाया जा सकता है। तुम बच्चे तो रचता औररचना की आः मः अः को जानते हो। इसमे सिर्फ माताओं की ही बात नही है दोनो की ही जरूरत है। दोनो ही श्रीमत पर अपने जीवन को ऊंच बनाते है। पवित्र दुनियां की स्थापना हो रही है। इसमे तो मेल फीमले दोनो ही चाहिये नां।जानते हो कि हर बात 5000साल पहले भी हुई थी।सूरत का हु कोई भी ब्रकुः लिखे कि यह नई बात नही है।5000वर्ष पहले भी यह सब हुआ था। 5000वर्ष पहले मुख राम राज्य था।फिर से स्थापन हो रहा है। वो तो दुनियां ही पावित्र होती है।अब है विकारी दुनियां। फिर सतयुगी पावन दुनियां कैसे बने सो तो बाप ही सुनाते है। ईश्वरिय मत ले रहे है। कलयुग मे तो है मनुष्य सतयुग मे है ही दे बतायें। उनको तो मत की दरकार ही नही। आगे चल कर बच्चे ऐसे ही भाषण करेंगे जिनके कि सर्विस का शौक है। इसमे तो बहुत रायल चलन चाहिये। कल्प पहले जो बने थे वो पुरुषार्थ करते रहते है। बाप डायरेक्शन्स भी देते रहते है।गुड नाईट(19-8-68प्रातः का खासजोरदार पुआईन्ट——)

किसीकी भी चोरी हो जाती है तो सब कुछ दे दिया जाता है।तुम बच्चो को बाप से राजाई आद मिलती है तो क्या कपडे आद नही मिलेंगे। सिर्फ फालतु खर्चा नही करना है। क्योंकि अबलायें ही मदद करती है। स्वर्ग की स्थापना के काम में। उनके पैसे फिर यु ही बरबाद भी नही करने चाहिये। वो तुम्हारी परवरिश करते है तो फिर तुम्हारा काम है उनकी परवरिश करना। नही तो फिर वो सौगा पाप होकर सिर पर चढ़ता है। बाप तो कहेंगे नां पुरुषार्थ करके ऊंच पद पाओ। रहम दिल भी बनो। पैगाम देते रहो। कि बाप कहते है कि मुझे याद करो तो पावन बनोगे। अब नर्क है तो जरूर कभी स्वर्ग भी होगा नां।अब स्वर्ग मे जाने लिये बाप को याद करो। सभी को यही बाप को पैगाम देते रहो। बच्चो से बाप दादा की गुडमोर्निंग